Vol III Issue X April 2014 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.net

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-3 | Issue-10 | April-2014
Available online at www.aygrt.isrj.net

कबीरः विचार दर्शन और प्रासंगिकता

अरूण कुमार आर्य

एम. ए. (हिन्दी)

***सारांश* :-**

निर्गुण भक्ति काव्य धारा के ज्ञानाश्रयी शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि कबीरदास ने इसी शरीर से परम पद को प्राप्त कर लेने या अनुभव करने की राह बतलाई । नश्वरता में अमरत्व को ढूंढने की साधना करने वाले कबीर ने बाह्य आडंबरों को त्याग कर असीम सत्ता के प्रति उत्कट प्रेम को ही भक्ति के लिए आवश्यक माना । उन्होंने मनुष्यों में ब्रह्म–दर्शन करके मनुष्य मात्र की समानता की घोषणा की । कबीर का सम्पूर्ण दर्शन स्वानुभूत ज्ञान पर आधारित है। वैश्वीकरण, औद्यागीकरण और उदारीकरण के इस युग में भी ब्रह्म, जीव, जगत, माया, भक्ति, मोक्ष, और राम नाम जैसे विषयों पर व्यक्त कबीर के विचार आज भी हमारा मार्गदर्शन उसी प्रकार करते हैं जिस प्रकार उनके युग में करते थे।
कुंजी शब्द– निर्गुण भक्ति, प्रेम, ब्रह्म, युग, समानता

***प्रस्तावना* :**

मध्ययुगीन हिन्दी भक्ति साहित्य में कबीर का नाम सबसे पहले लिया जाता है। कबीर एक ऐसे महान विचारक थे, जिन्होंने रूढ़ियों के मकड़जाल में फंसी भारतीय जनता को जगाने का काम किया । सन्त–मत के समस्त कवियों में सबसे अधिक प्रतिभाशाली और मौलिक कवि कबीर ने ज्ञान, भक्ति, वैराग्य आदि विषयों को बड़े सुबोध रूप में व्यक्त किया है।

ब्रह्म

कबीर किसी एक परम्परा या सम्प्रदाय से जुड़े हुए संत नहीं थे, किन्तु उनको रामानंद का शिष्य कहा गया है। डॉ. हजारी प्रसार द्विवेदी के अनुसार, "सभी परम्पराएँ इस बात का समर्थन करती हैं कि कबीरदास का रामानंद के साथ सम्बन्ध था। कबीरदास ने स्वयं स्वीकार किया है कि रामानंद ने उन्हें चेताया था ; पर क्या चेताया था और स्वयं क्या चेते हुए थे इस विषय में नाना मुनियों के नाना मत हैं। रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है कि तत्व दृष्टि से रामानुजाचार्य जी के मातावलंबी होने पर भी अपनी उपासना इन्होंने अलग की ।"[1] द्विवेदी जी आगे लिखते हैं –" रामानंद के प्रधान उपदेश अनन्य भक्ति को कबीर ने शिरसा स्वीकार कर लिया था। बाकी तत्व ज्ञान को उन्होंने अपने संस्कारों, रूचि और शिक्षा के अनुसार एकदम नवीन रूप दे दिया था।"[2]

कबीर के अनुसार ब्रह्म ही इस जगत का एक मात्र कारण है और आत्मा से अभिन्न है। बीज का ही परिणत –रूप वृक्ष है और वृक्ष को छोड़कर छाया नहीं रह सकती ; उसी प्रकार ब्रह्म का ही परिणत–रूप यह जगत् है और माया उससे अलग कोई सत्ता नहीं रखती।

साधो, ब्रह्म अलख लखाया, जब आप आप दरसाया।
बीज–मद्ध ज्यों बृच्छा दरसै, बृच्छा मद्धे छाया ।[3]

वस्तुतः कबीर के काव्य में ब्रह्म एक है। उसका कोई रूप, कोई आकार, कोई व्यक्तित्व नहीं है। वह रूपातीत, गुणातीत है। वह इस जगत के कण–कण में व्याप्त है। उसे किसी प्रतिमा, देवालय या तीर्थस्थान में नहीं पाया जा सकता वह अवतार ग्रहण नहीं करता। वह संसार की प्रत्येक वस्तु में समाया हुइत्रआ है। वह वर्णनातीत है। गूंगे के गुड़ के समान केवल उसे अनुभव के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

कबीर के अनुसार समुद्र और समुद्र की लहर में कोई भेद नहीं है। केवल नाम और रूप का भेद है। इसी प्रकार जगत ही ब्रह्म है और ब्रह्म ही जगत है। परब्रह्म में एक जगत के बाद दूसरा जगत इस प्रकार चल रहा है जैसे जपमाला के मनके चलते हैं–

दरियाव की लहर दरियाव है जी
दरियाव और लहर में भिन्न कोयम्।

उठे तो नीर है बैठे तो नीर है
कहो जो दूसरा किस तरह होयम्।
उसी का फेर के नाम लहर धरा
लहर के कहे क्या नीर खोयम् ।
जक्त ही फेर जब जक्त परब्रह्म में
ज्ञान कर देख माल गोयम् ।।[4]

कबीर के ब्रह्म सम्बन्धी विचारों पर प्रकाश डालते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है, "सारांश यह कि जो ब्रह्म हिंन्दुओं की विचार पद्धति में ज्ञान मार्ग का एक निरूपण था उसी को कबीर ने सूफियों के ढ़र्रे पर उपासना काही नहीं प्रेम का भी विषय बनाया और उसकी प्राप्ति के लिए हठयोगियों की साधना का समर्थन किया।"[5]

जीव

कबीर के अनुसार जीवात्मा वस्तुतः परमात्मा से भिन्न नहीं है। जिस प्रकार वट के बीज में ही उसके वृक्ष की सत्ता रहती है और उस सत्ता के अभाव में वृक्ष भी नहीं होता और पवन–पानी आदि भी नहीं पा सकता, उसी प्रकार आपा (आत्मा) में ही सब सत्ता के भीतर ही इस शरीर से आच्छन्न भगवदंश जीव है।

साधो, सहजै काया सोधो ।
जैसे बट का बीज ताहि में पत्र–फूल–फल छाया।
काया मद्धे बीज बिराजे, बीजा मद्धे काया।
अग्नि–पवन–पानी–पिरथी–जभ, ता–बिन मिलै नाहीं।
काजी पंडित करो निरनय को न आपा माहीं।
जल–भर कुंभ जलै बिच धरिया, बाहर भीतर सोई।[6]

,,,

साहेब हममें साहेब तुममें जैसे प्राना बीज में।[7]

जगत

कबीर के अनुसार यह जगत नश्वर है। जिस प्रकार बूंद पड़ने पर कागज की पुड़िया घुल जाती है उसी तरह यह जगत क्षणभंगुर है। यह संसार कांट की बाड़ी है जिसमें उलझ कर मर जाना है। इस झाड़ और झाँखड़ रूपी संसार में सतगुरू का नाम ही ठिकाना है।

रहना नहिं देस बिराना है।
यह संसार कागद की पुड़िया, बूँद पड़े घुल जाना है।
यह संसार काँट की बाड़ी उलझ–पुलझ मरि जाना है।
यह संसार झाड़ औ झाँखर, आग लगि बरि जाना है।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरू नाम ठिकाना है।[8]

कबीर के अनुसार कर्त्ता ने आनंद से ही सब कुछ उत्पन्न किया है और सब कुछ आनंद ही है –

कहैं कबीर विचारिके, जाकै बर्न न गाँव।।
निराकार और निर्गुना, है पूरन सब ठाँव।।
करता आनंद खेल लाई, ओंकारते सृष्टि उपाई।।[9]

माया

कबीर ने अपनी साखियों में माया को वेश्या, पापिनी, मोहिनी, डाकिनी, ठगनी, काल की खानि आदि कहा है। उन्होंने माया को परम तत्व के साक्षात्कार में बहुत बड़ी बाधा बतलाया है–

कबिरा माया पापिनी, हरिसों करै हराम ।
मुखकडीवाली कुबुधि की, कहन न देई राम ।।[10]
माया की सबलता का वर्णन करते हुए कबीर कहते हैं–
शंकरहूतें सबल है, माया या संसार ।

अपने बल छूटै नहीं, छुड़ावै सिरजन हार।।[11]

साधारण जीव के लिए माया छोड़ना कठिन है। गृह त्याग किया तो वस्त्र (विशेष भेष) धारण किया और अब वस्त्र छोड़ा तो फेरी देने लगे–

अवधू, माया तजी न आई ।
गिरह तज के बस्तर बाँधा, बस्तर तज के फेरी ।।[12]

वास्तव में सच्चा वैराग्य वह है जहाँ मन वैराग्यवश माया को त्याग देता है। माया को वश में करने पर वह संतों की दासी बन जाती है –

माया दासी साधुकी, उभी देइ असीस।
बिलसि और लाते छड़ी, सुमरी सुमरि जगदीस।।[13]

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार," कबीरदास ने माया के सम्बन्ध में जो कुछ कहा है, वह वस्तुतः वेदांत द्वारा निर्धारित अर्थ में ही। खूब संभव है कि कबीरदास ने भक्ति–सिद्धान्त के साथ ही माया सम्बन्धी उपदेश भी रामानंदाचार्य से ही पाया था, इसीलिए वे बराबर भक्त को माया –जाल से अतीत समझते है।"[14]

माया मरि मन मारिया, राख्या अमर शरीर ।
आसा तृष्णा मारिके, स्थिर ह्वै रहा कबीर ।।[15]

भक्ति

कबीर निर्गुण– निराकर राम के भक्त थे। भक्ति के लिए अपने उपास्य के प्रति अनन्य भावना होनी चाहिए । कबीर की भक्ति अनन्यभाव की थी। उन्होंने भक्ति के लिए प्रेम की भावना को आवश्यक माना है –

प्रेम बिना जो भक्ति है, सो निज दम्भ विचार ।
उदर भरनके कारने, जन्म गँवाँयो सार।।[16]

भाव बिना नहिं भक्ति जग, भक्ति बिना नहिं भाव ।
ये दोऊ जो परस्पर, दोय मिलि एक सुभाव।।[17]

कबीर के अनुसार भगवान का भक्त कहलाने के लिए जाति, नाता आदि के बंधनों को तोड़ना होगा–

जबलग नाता जातिका, तब लगि भक्ति न होय।
नाता तोरे हरि भजै , भक्त कहावे सोय ।।18

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार –" कबीरदास की भक्ति–साधना का केन्द्र बिन्दु प्रेम–लीला है। किन्तु इस लीला का जो स्वरूप कबीरदास ने उपस्थित किया है, वह बहुत व्यापक और विशाल है।"[19]

प्रेम पांवरी पहरिके; धीरज कज्जल देय।
शीला सिंदूर भरायकै, पुनि पियका सुख लेय।।[20]

मोक्ष

मोक्ष को ब्रह्म–स्वरूप कहा गया है। कबीर ने मोक्ष को इस संसार से बार–बार आवागमन के चक्र से छुटकारे के अर्थ में ग्रहण किया है। जब मनुष्य यह जान जाता है कि आत्मा का परमात्मा से क्या सम्बन्ध है तब वह छूट जाएगा। ब्रह्म का ज्ञान ही छुटकारा है।

बंधा को बंधा मिलै, छूटै कौन उपाय।
कर संगति निरबंधकी, पलमें लेइ छुड़ाय।।[21]

कबीर के राम

महात्मा कबीर निर्गुण –निराकार ब्रह्म के उपासक थे। उसकी भक्ति–भावना की प्राप्ति के लिए कबीर ने राम को आलम्बन बनाया था

—

निर्गुण राम जपहु रे भाई । अविगति की गति लखी न जाई।।
चारि वेद जाके सुमृत पुराना । नौ व्याकरनां मरम न जाना।।
सेसनाग जाके गरूड समाना। चरन —कँवला कँवला नहिं जाना।।
कहै कबीर नाकै भेदै नाहीं । निज जन बैठे हरि की छाहीं ।।[22]

ध्यातव्य है कि कबीर के राम दशरथ सुत राम नहीं थे। कबीर के राम निरंजन हैं, उसका रूप नहीं रेखा नहीं । वह ब्रह्म व्यापक है, सबमें एक भाव से व्याप्त है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार," त्रिगुणातीत, द्वैताद्वैतविलक्षण, भावाभावविनिर्मुक्त, अलख, अगोचर, अगम्य, प्रेमपारावार भगवान को कबीरदास ने 'निर्गुण राम' कह कर सम्बोधन किया है। वह समस्त ज्ञान तत्वों से भिन्न है फिर भी सर्वमय है। वह अनुभवैकगम्य है, केवल अनुभव से ही जाना जा सकता है।23

प्रासंगिकता

यद्यपि संत कबीर का पालन —पोषण एक साधारण परिवार में हुआ था, किन्तु उनकी पहचान आज वैश्विक रूप में है। उन्होंने भक्तिकाल का वैभव बढ़ाया। उनकी वाणी वैदिक परम्परा एवं ब्राह्मणवादी व्यवस्था के विरूद्ध विद्रोह के रूप में दिखाई देती है। वस्तुतः कबीर व्यक्ति के आंतरिक वैर—विरोध को मिटाकर उसमें समता, उदारता, सहिष्णुता, प्रेम और करूणा जैसे शाश्वत मूल्यों को पैदा करना चाहते हैं। धर्म के बाह्य स्वरूप के आधार पर लोग अपनी श्रेष्ठता, उच्चता, वर्चस्व थोपना चाहते हैं तभी दंगे, फसाद और झगड़े होते हैं। कबीर ने बतलाया कि धर्म वस्तुतः आत्मिक अनुभूति का ही स्वरूप है, जो प्रत्येक मनुष्य में एक जैसा होता है।

कबीर ने परमात्मा का साक्षात्कार आत्मानुभूति के रूप में किया है। ऐसे वर्ग जिनके लिए समाज के प्रभुत्वशाली वर्गों ने अक्षर तथा शब्द ज्ञान का निषेध कर दिया था उन्हें कबीर ने आत्मवान बनाया। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है —"इसमें कोई संदेह नहीं कि कबीर ने ठीक मौके पर जनता के उस बड़े भाग को संभाला जो नाथपंथियों के प्रभाव से प्रेमभाव और भक्तिरस से शून्य और शुष्क पड़ता जा रहा था। उनके द्वारा यह बहुत ही आवश्यक कार्य हुआ। इसके साथ ही मनुष्यत्व की सामान्य भावना को आगे करके निम्न श्रेणी की जनता में उन्होंने आत्मगौरव का भाव जगाया और भक्ति के ऊँचे से ऊँचे सोपान की ओर बढ़ने के लिए बढ़ावा दिया ।"[24]

'मैं कहता आंखिन देखी' कहकर कबीर ने जीवन और यथार्थ को सर्वाधिक महत्व दिया है। कबीर ने वेद को अपनी जागीर मानने वालों से असहमति व्यक्त की है। संवेदनाविहीन व्यवहार वह भी वेद के नाम पर, कबीर को अस्वीकार है। इसलिए वह 'कागद लेखी' को 'आंखिन देखी' के सामने अस्वीकार करते हैं। भावना और संवेदना को साथ लेकर चलने के कारण कबीर आज के युग के मसीहा हैं।

सांस्कृतिक परिवर्तन प्रक्रिया के दौरान घटित समन्वय एवं संघर्ष आदि तथ्यों को ध्यान में रखते हुए कहा जा सकता है कि कबीर ने वस्तुतः मध्ययुग में विछिन्न हो चुके धर्म के सूत्रों को फिर से जोड़ा और बाह्य आडंबरों को छोड़कर पुनः आत्मा परमात्मा के सूत्र को संपादित रूप में सबको थमाया है ; जो आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने उनके समय में थे।

निष्कर्ष —

संत कबीरदास ने किसी भी विचारधारा या दर्शन का अंधानुकरण नहीं किया। उन्होंने वेद—पुराण—सम्मत ज्ञान को अस्वीकार कर मुक्ति का साक्षात साधन निर्विशेष आत्म—तत्व ज्ञान को ही माना है। बाह्याचार के जंजालो से मुक्त कबीर की भक्ति में सभी मनुष्यों के लिए समानता की भावना है। वस्तुतः संत—मत के समस्त कवियों में कवि कबीर सबसे अधिक प्रतिभाशाली एवं मौलिक थे। अनेक प्रकार के रूपकों, अन्योक्तियों के द्वारा उन्होंने ज्ञान की जो बातें कही हैं, वह आज भी प्रासंगिक हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची —

1.द्विवेदी हजारी प्रसाद, कबीर, पृष्ठ—83, चौंदहवीं आवृत्ति —2008, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2.वही, पृष्ठ —85
3.द्विवेदी हजारी प्रसाद, कबीर, परिशिष्ट—2कबीर वाणी,पद सं.—7
पृष्ठ—183, चौदहवीं आवृत्ति —2008, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4.वही, पद सं.—14, पृष्ठ 186 —87
5.शुक्ल रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास (आ. रामचन्द्र शुक्ल ग्रंथावली पहला भाग) पृष्ठ— 54, प्रथम संस्करण संवत 2041, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
6.द्विवेदी हजारी प्रसाद, कबीर, परिशिष्ट—2 कबीर वाणी, पद सं.—46, पृष्ठ 203
—04 चौदहवीं, आवृत्ति 2008, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।
7.वही, पद सं.—97, पृष्ठ—220
8.वही, पद सं.— 130, पृष्ठ—235
9.वही, पद सं.—82, पृष्ठ—215
10.सत्य कबीरकी साखी, 37.4 पृष्ठ—111, संस्करण सन् 2000 श्री वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई।
11.वही, 37.28 पृष्ठ —113

12.द्विवेदी हजारी प्रसाद, कबीर, परिशिष्ट–2कबीर वाणी, पद सं.–5 पृष्ठ–181, चौदहवीं आवृत्ति 2008, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
13.सत्य कबीरकी साखी, 37.15, पृष्ठ – 112 संस्करण, सन् 2000, श्री वेंकटेश्वर प्रेस बम्बई।
14.द्विवेदी हजारी प्रसाद, कबीर, पृष्ठ–93, चौदहवीं आवृत्ति 2008, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
15.सत्य कबीरकी साखी, 37.18 पृष्ठ–112, संस्करण सन् 2000 श्री वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई।
16.वही, 15.12, पृष्ठ – 43
17.वही, 15.18 पृष्ठ –44
18.वही, 15.6 पृष्ठ –42–43
19.द्विवेदी हजारी प्रसाद, कबीर, पृष्ठ–148, चौदहवीं आवृत्ति 2008, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
20.सत्य कबीरकी साखी; 18.24 पृष्ठ–49, संस्करण सन् 2000 श्री वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई।
21.वही, 87.1 पृष्ठ – 233
22.कबीर ग्रंथावली, पद– 49, संपादक –श्यामसुंदरदास, 1928, काशी नागरी प्रचारिणी सभा काशी ।
23.द्विवेदी हजारी प्रसाद, कबीर, पृष्ठ–105, चौदहवीं आवृत्ति 2008, राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली।
24.शुक्ल रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास (आ. रामचन्द्र शुक्ल ग्रंथावली पहला भाग) पृष्ठ– 46, प्रथम संस्करण संवत 2041, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

अरूण कुमार आर्य
एम. ए. (हिन्दी)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.net